महिलाओं व लड़कियों के लिए हिंसा मुक्त सुरक्षित शहर

जागोरी, यू. एन. वुमेन, यू. एन. हैबिटैट व अन्य भागीदारों की साझी पहल

एक सुरक्षित शहर वह होता है जिसमें औरतें व लड़कियां न सिर्फ यौन हिंसा और उत्पीड़न से मुक्त जीवन जीती हैं बल्कि इस तरह की किसी भी हिंसा और उत्पीड़न होने के डर से भी आज़ाद रहती हैं। हिंसा महिलाओं व लड़कियों के साथ होने वाले आम भेदभाव का एक सत्त रूप है जो उनकी स्वतंत्र आवाज़ाही तथा शहर तक पहुंच बनाने की क्षमता में रूकावट पैदा करती है। जागोरी का ''सुरक्षित शहर अभियान'' तेज़ी से होने वाले शहरीकरण के लैंगिक स्परूप के कारण महिलाओं और लड़कियों के लिए पैदा होने वाले शहरी अलगाव, मौकों में कमी तथा जगहों व सेवाओं तक उनकी घटती पहुंच को संबोधित करने के लिए प्रतिबद्व एक पहल है। सन् 2004 में जागोरी द्वारा शुरू की गई यह अगुवाई अब काफी आगे बढ़ चुकी है और इसके तहत सार्वजनिक आउटरीच (शिरकत), सामुदायिक सक्रियता, शोध व शिक्षा के माध्यम से अनेक मुद्दों को जोड़ा गया है। 2009 के समय से, यू एम विमेन, यू एन हैबिटेट, सरकार तथा अन्य भागीदारों के साथ मिलकर, इस अभियान का ध्यान गतिविधियों को बढ़ाते हुए सुरक्षित शहर मॉडल (प्रारूप) को दिल्ली के शहरी इलाकों तक विस्तारित करने पर केंद्रित किया गया है। एक लंबे समय से जागोरी ने इस विशय पर भारत के आठ से भी अधिक शहरों के महिला समूहों, जिसमें बंगलुरू, भोपाल, गुवाहाटी, कोलकाता, मुंबई, कोची, थिरूवनंतापुरम, रांची व अन्य भी शामिल हैं, के साथ अपनी जानकारियां व शोध साधन बांटे हैं।

1- “kgjh fu;kstu o lkoZtfud txgksa dk çk:Ik ¼fMtkbu½

शहरी जगहों के प्रारूप (डिज़ाइन) में – जिसमें शहरी नियोजन से लेकर उप–नियम तक सभी शामिल हैं, में महिलाओं व लड़कियों के शहरी अलगाव को बढ़ाने वाले भोगौलिक पक्षों को संबोधित करके शहर तक उनकी समान पहुंच सुनिश्चित की जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, आस–पड़ोस की रूपरेखा बनाते समय नियोजकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सड़कों, बस स्टैंडों, सामुदायिक शौचालय परिसरों, पानी की जगहों तथा मैट्रो स्टेशनों पर पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था हो, जिससे वे विभिन्न वर्गों के नागरिकों जैसे महिलाओं, बुजुर्गों, बच्चों व अन्य द्वारा उपयोग में लाई जा सकें। पिछले कई सालों से जागोरी ने शहरी नियोजन विभागों जिनमें दिल्ली नगर निगम, युनाइटेड ट्रैफिक एंड ट्रांसर्पोटेशन इन्फ्रास्ट्रक्चर सेंटर – (संयुक्त यातायात व परिवहन अवंरचना केन्द्र), दिल्ली विकास प्राधिकरण व दिल्ली संवाद आयोग शामिल हैं, को अपनी सुरक्षा ऑडिटों व अध्ययनों पर आधारित नीति व संरचनात्मक सुझाव दिए हैं।

2- “kgjh vk/kkjHkwr lqfo/kkvksa dk çca/ku o ç’kklu

सार्वजनिक जगहों के प्रारूप कोलिंग संवेदनशील तरीकों से तैयार करना ही काफी नहीं होता – अगर सड़कों, बस अड्डों और सार्वजनिक शौचालयों तथा अन्य शहरी आधारभूत सुविधाओं के अच्छे रखरखाव पर ध्यान न दिया जाए तो उनकी उपयोगिता नहीं रहेगी। दिल्ली में देखें तो, शोध अध्ययनों से पता चलता है कि सार्वजनिक आधारभूत सुविधाओं (फुटपाथ, स्ट्रीट लाइट, सार्वजनिक शौचालय, पार्क आदि) का खराब रखरखाव महिलाओं के लिए शहर हो असुरक्षित बनाने वाले कारणों में प्रमुख माना जाता है।

निम्न आय वर्ग समुदायों, घरेलू व प्रवासी कामगरों तथा बेघर समुदाय के जागोरी के काम ने शहर में ऐसी समावेशी जगहों के निर्माण की जरूरत पर जोर दिया है जिनकी देखभाल राज्य व समुदाय द्वारा मिल जुल कर की जा सके।

3- lkoZtfud ;krk;kr

जागोरी तथा न्यू कान्सेप्ट (2010) द्वारा किए गये शोध अध्ययन ने कुछ ऐसे पुख्ता सबूत पेश किए हैं जो दर्शातें हैं कि तकरीबन 54 प्रतिशत औरतें भीड़भाड़ वाले सार्वजनिक यातायात व बस स्टॉप पर असुरक्षित महसूस करती हैं। संबंद्व विभागों की नियमित निगरानी के तहत यातायात सेवाओं को लगातार बेहतर बनाने की कोशिश की जानी चाहिए। अन्य गतिविधियों के साथ साथ जागोरी ने दिल्ली यातायात परिवहन (डी टी सी) के साथ भागीदारी करके

लिंग संवेदनशील प्रशिक्षण और मॉडयूल विकसित किए हैं जिन्हें 3500 बस चालकों तथा 50 प्रमुख प्रशिक्षकों तक पहुंचाया गया है जो हर साल 10000 से भी अधिक डी टी सी कर्मचारियों के साथ काम करते हैं। अवसर नियोजन की प्रक्रिया में यात्रा के अंतिम पड़ावों पर पूरा ध्यान नहीं दिया जाता और इस छोटी दूरी को साझे ऑटो, रिक्शा, आर टी वी जैसे अनौपचारिक साधनों के भरोसे छोड़ दिया जाता है। दिल्ली मैट्रो रेल निगम और दिल्ली परिवहन प्राधिकरण को इस अंतिम पड़ाव के सफर को बेहतर बनाने से लेकर सार्वजनिक यातायात में हैल्पलाइन नम्बरों के प्रमुख प्रदर्शन जैसे महत्वपूर्ण सुझाव भेजे गये हैं।

4- ifyflx

यह स्वीकारना जरूरी है कि बेहतर पुलिसिंग की अपनी अहमियत है परन्तु सिर्फ ऐसा कर लेने से शहर में बढ़ती हिंसा और यौन हमले की समस्या को नहीं सुलझाया जा सकता। इसके साथ साथ विभिन्न संस्थानों के दैनिक

मानकों और व्यवहारों को आकार देने वाली पितश्सत्तात्मक विचारधाराओं को भी संबोधित करने की जरूरत है। यह भी जरूरी है कि यौन हिंसा और यौन उत्पीड़न के मामलों से निपटने के लिए पुलिस सक्षम हो तथा महिलाओं की उन तक पहुंच बने जिससे वे आसानी के साथ प्राथमिकी रिपोर्ट (एफ आई आर) दर्ज कर सकें। मार्ग (2012) के साथ मिलकर दिल्ली पुलिस हैल्पलाइन (100/1091) पर किए गये अध्ययन ने शहर की महिला हैल्पलाइन को बेहतर बनाने के लिए कुछ प्रमुख सुझाव प्रस्तुत किए हैं। इसके अलावा जागोरी ने दिल्ली पुलिस र्कचारियों के लिए लिंग संवेदनशील प्रशिक्षण सत्रों का भी संचालन किया है।

5- dkuwu] U;k; o ihfM+rk dk lg;kx

संवेदनशील पुलिसिंग सुनिश्चित करना शहर में महिलाओं व लड़कियों के लिए इंसाफ और सहयोग मुहैया कराने की दिशा में एक पहला कदम है। आमतौर पर सार्वजनिक जगहों पर होने वाले यौन अपराधों के सर्वाइवर्स के लिए उपयुक्त कानूनी, सामाजिक, भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक सहयोग व सेवाओं तक पहुंच भी मुहैया की जानी चाहिए। इस क्षेत्र में अपने व्यापक अनुभवों के साथ जागोरी हिंसा के सर्वाइवर्स को परामर्श व कानूनी रेफरल व सेवाएं प्रदान कराती है तथा महिला सर्वाइवर्स समुदायों के साथ सुरक्षा केन्द्रों के निर्माण और पैरा–लीगल मदद के लिए काम करती है। इसके अलावा जागोरी अनेक एजेंसियों को लिंग संवेदनशील प्रक्रियाओं व शिश्टाचार विकसित करने के लिए तकनीकी सहयोग भी प्रदान करती है। (स्वर्गीय) जस्टिस वर्मा समिति, जस्टिस मेहरा आयोग, महिला व बाल विकास मंत्रालय, दिल्ली सरकार तथा महिला अधिकारों व सुरक्षा पर विशेश संसदीय स्थाई समिति के पास भी जागोरी द्वारा विशिश्ट सुझाव भेजे गए हैं।

6- f'k{kk

लड़कियों व औरतों की सुरक्षा को संबोंधित करने तथा औरतों के खिलाफ हिंसा को खत्म करने में लड़कों पुरूशों की महत्वपूर्ण भूमिका पर गौर करने के लिए स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण शैक्षिक स्थल होते हैं। नागरिकों के बीच उत्पीड़न और हमलों की अस्वीकशति व कानूनों और सेवाओंको लेकर जागरूकता बढ़ाने के लिए भी शैक्षिक संस्थान एक अहम जगह हो सकते हैं। इस क्षेत्र में, जागोरी ने प्रवाह और सी वाई सी के साथ लेकर सरकार स्कूल

शिक्षकों के साथ काम करते हुए स्कूली पाठ्यक्रम में लैंगिक नज़रिया विकसित करने और स्कूलों में सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भागीदारी निभाई है। विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों में अभियान व संगोष्ठियां आयोजित की गई हैं। दिल्ली सरकार के जेंडर संदर्भ केन्द्रों में महिला सुरक्षा प्रशिक्षण व अनेक संबंद्व पणधारियों के बीच आउटरीच का काम भी शुरू किया गया है।

7- lpuk çkS|ksfxdh ¼buQkjes'ku VsDuksykWth½

शहरी सुरक्षा सुनिश्चित करने में सूचना प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मसलन, अनेक नई अगुवाईयों में तकनीक का उपयोग करके, जैसे स्मार्ट फोन के जरिये लोगों को आपातकालीन सेवाओं से जोड़ने तथा आस–पड़ोस के संभावित सुरक्षा मुद्दों पर निगरानी रखी जा रही है। जागोरी ने भी मोबाइल ऐप ''सेफटी–पिन'' के साथ मिलकर दिल्ली में तकरीबन तीन हज़ार सुरक्षा ऑडिट किए हैं। सामुदायिक महिला व युवा समूहों ने भी विभिन्न स्थानीय पणधारियों के साथ आस–पास के इलाकों में किए गये सुरक्षा ऑडिटों पर आधारित कुछ प्रमुख सुझाव साझा किए हैं।

8- lkoZtfud tkx:drk

शहरी जगहें पूरी तरह तभी सुरक्षित हो सकती है जब सभी निवासी महिलाओं और लड़कियों के साथ होने वाली हिंसा के हर रूप और यौन हमलों को जड़ से मिटाने के लिए साथ आएं। औरतों का शहर पर पूरा अधिकार होता है, साथ ही उनका हक शहर की आधारभूत सुविधाओं और सेवाओं व समान नागरिकता पर भी है। सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के लिए दीर्घकालीन संवेदनशीलता अभियान और आउटरीच प्रयासों के लिए समय समय पर की गई गतिविधियां पितश्सत्तात्मक मानकों और मूल्यों को संबोंधित करने और महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों का दावा करने के लिए एक जरूरी साधन है। जागोरी नियमित रूप से जन शिक्षा और जागरूकता प्रयासों को सड़क अभियानों, नाटक, लोकगीत, पठन सामग्री, कला, दीवारों पर चित्रकारी, रेडियो कार्यक्रम तथा अन्य रचनात्मक तरीकों के माध्यम से प्रोत्साहित करती रही है। विमेंस फीचर सर्विस के साथ भागीदारी करते हुए महिला सुरक्षा पर अनेक लेख भी प्रकाशित किए गए हैं। इसके साथ ही अन्य महिला संगठनों के साथ मिलकर चुनिंदा रास्तों/मार्गों पर लैंगिक विभेद उजागर करने के लिए सालाना सड़क सुरक्षा ऑडिट भी किए गए हैं।

जागोरी
JAGORI
30 years 1984-2014

बी–114, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली 110017
फ़ोनः 91–11–26691219/20 फ़ैक्सः 91–11–26691221
हेल्पलाइनः 91–11–26692700, 8800996640
jagori@jagori.org; www.jagori.org